IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

IJARSCT
Impact Factor: 5.731

Volume 5, Issue 1, May 2021

fgUnh&eqfLye lkgkn dk lkekftd Lo:i

M,- mn;Hkku ;kno

vflLVV iksQlj] fgUnh

राजकीय महिला महाविद्यालय, अम्बारी, आजमगढ़

प्राचीन काल से ही भारत अपने सामासिक संस्कृति के लिए जाना जाता रहा है। यहाँ पर कई धर्म तथा संस्कृतियों के लोग साथ–साथ रहते आए हैं यही वजह है कि भारत में सामाजिक सौहार्द पहले से विद्यमान रहा है।

भारत अपने यश वैभव के कारण विदेशियों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है। मध्य एशिया में जब कभी भी राजनैतिक उथल–पुथल होती थी अथवा किसी महत्वकांक्षी विजेता का उदय होता था तो इसका सीधा प्रभाव भारत पर भी पड़ता था। परिणाम स्वरूप समय–समय पर विभिन्न विदेशी जातियों का भारत में आगमन हुआ। भारतीय संस्कृति जो अपनी समन्वय–क्षमता के लिए प्रसिद्ध है, ने अपने में सबको आत्म सात कर लिया। जहाँ तक सौहार्द की बात है तो ''सौहार्द के उपाय प्राचीन काल से इस देश के सतह पर संतो ने तैयार किए है। कबीर नानक, दादू, रैदास जैसे समाज सुधारको ने चौराहे पर खड़ा होकर निर्भीकता पूर्वक सांप्रदायिक सद्भावना का विगुल बजाया है।''[1]

[1]. मंजुला राणा ''दशवें दशक के हिन्दी उपन्यासों में साम्प्रदायिक सौहार्द'' पृ0 126